



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीन तज १५५०	१७.५.२३	२	२-५

भारतीय संस्कृति सत्यपरक, नीतिपरक व धर्मपरक : डा. स्वामी शशवतानंद गिरी

विद्यार्थी भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबंधन पर ज्ञान प्राप्त कर लक्ष्य की ओर बढ़ें : काम्बोज

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबंधन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज उपस्थित रहे, जबकि बतौर मुख्य वक्ता के रूप में श्रीश्री 1008 अखंड पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर (पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी) डा. स्वामी शशवतानंद गिरी महाराज मौजूद रहे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा ने स्वागत किया।

डा. स्वामी शशवतानंद गिरी महाराज ने बताया कि भारतीय संस्कृति में सत्य, धर्म और नीति का समावेश है। इसलिए चाहे विद्यार्थी हो या युवा और या फिर बुजुर्ग सभी को अपनी संस्कृति को पहचानने की जरूरत है। इसके लिए सभी को अपनी निजी जिंदगी में



वीधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में संगोष्ठी के दैरान संबोधित करते मुख्य वक्ता डा. स्वामी शशवतानंद गिरी महाराज। ● पीआरओ।

सकारात्मक सोच, उत्साह, सत्यता, विचारशीलता व अच्छे संस्कारों को अपनाना चाहिए। महाराज ने बताया कि भारतीय संस्कृति सत्याग्रही है, जोकि परमार्थ व व्यवहारिक सत्य पर आधारित है। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति सत्यपरक, नीतिपरक व धर्म परक है। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह व अंहकार हमारे विकार हैं, जिन पर हमें

नियंत्रण करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि हमारी भारतीय संस्कृति मूल्यों पर आधारित है। इसलिए युवाओं को अपने अंदर नैतिक मूल्य विकसित कर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा का महत्व बताया व मनुष्य की परिभाषा भी समझाई। उन्होंने बताया कि मनुष्य प्रकृति का प्रतियोगी है ना कि अनुयोगी है

क्योंकि मनुष्य विचारशील प्राणी है व उसके अंदर सोचने-समझने की शक्ति है। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों को बताया कि उन्हें अपने माता-पिता व गुरुजनों का सानिध्य लेकर सकारात्मक सोच के साथ जीवन में अगे बढ़ना चाहिए व राष्ट्रहित में अपना योगदान देना चाहिए। प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि बेदांत, उपनिषद् व श्रीमद्भगवत् गीता के प्रकांड विद्वान् स्वामी शशवतानंद गिरी महाराज के प्रवचन से विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा। उनको अपने भारतीय संस्कृति को समझने में सहायता भी मिलेगी। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में बेहतर मानवीय प्रबंधन के साथ जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा मिलेगी। मंच का संचालन छात्रा मुस्कान ने किया व स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. केडी शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१५ भारत	१७.५.२३	२	२-४

• कृषि कॉलेज में 'भारतीय संस्कृति और मानवीय प्रबंधन' विषय पर संगोष्ठी
**भारतीय संस्कृति सत्यपरक, नीतिपरक
और धर्मपरक : डॉ. शश्वतानंद गिरी**

भारतरन्ध्र हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि कॉलेज के सभागार में 'भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबंधन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के तौर पर विवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित रहे और बतौर मुख्य वक्ता के रूप में श्रीश्री 1008 अखड़ पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर (पंचमी अखड़ाश्री निरंजन) परम पूज्य डॉ. स्वामी शश्वतानंद गिरी ने बताया कि भारतीय संस्कृति में सत्य, धर्म और नीति का समावेश है। इसलिए चाहे विद्यार्थी हो या युवा और या फिर कुर्जुरा सभी को अपनी संस्कृति को पहचानने की जरूरत है। इसके लिए सभी को अपनी निजी जिंदगी में सकारात्मक सोच, उत्साह, सत्यता, विचारशीलता व अच्छे संस्कारों को अपनाना चाहिए। सहज, दर्शनिक व मौलिक विचारों के ज्ञाता गिरी महाराज ने बताया कि भारतीय संस्कृति सत्यग्राही है, जो परमार्थ व



व्यावहारिक सत्य पर आधारित है। उन्होंने बी.आर. काम्बोज ने बताया कि बेदांत, उपनिषद व श्रीमद्भगवत् गीता के विद्वान् स्वामी शश्वतानंद गिरी महाराज के प्रवचन से विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा व उनको अपने भारतीय संस्कृति को समझने में सहायता भी मिलेगी। विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबंधन के बारे में ज्ञान होना जरूरी है ताकि वे समाज के उत्थान में सकारात्मक सोच के साथ अपना बेहतर योगदान दें। संच का संचालन छात्रा मुस्कान ने किया व स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केंडी शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उजीत सभान्धा	१७.५.२३	५	३-५

भारतीय संस्कृति सत्यपरक, नीतिपरक व धर्मपरक : डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरी महाराज

हिसार, 16 मई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में 'भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबंधन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित रहे, जबकि बतौर मुख्य वक्ता के रूप में श्री श्री 1008 अखंड पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर (पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी) परम पूज्य डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरी महाराज मौजूद रहे। संगोष्ठी के शुभारंभ में सभी ने सरस्वती वंदना कर पूज्य अर्पित किए। इसके बाद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके.पाहुजा ने स्वागत किया। मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 अखंड पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर (पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी) परम पूज्य डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरी महाराज ने बताया कि भारतीय संस्कृति में सत्य, धर्म और नीति का समावेश है। इसलिए चाहे विद्यार्थी हो या युवा और या फिर बुजुर्ग सभी को अपनी संस्कृति को पहचानने की जरूरत है। इसके लिए सभी को अपनी



संगोष्ठी के शुभारंभ पर मां सरस्वती वंदना करते हुए डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरी महाराज। निजी जिंदगी में सकारात्मक सोच, उत्साह, सत्यता, विचारशीलता व अच्छे संस्कारों को अपनाना चाहिए। सहज, दार्शनिक व मौलिक विचारों के ज्ञाता गिरी महाराज ने बताया कि भारतीय संस्कृति सत्याग्रही है, जोकि परमार्थ व व्यवहारिक सत्य पर आधारित है। उन्होंने उपस्थित युवा विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति का मतलब समझाया व बताया कि भारतीय संस्कृति सत्यपरक, नीतिपरक व धर्म परक है। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह व अंहकार हमारे विकार हैं, जिन पर हमें नियंत्रण करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि हमारी भारतीय संस्कृति मूल्यों पर आधारित है। इसलिए युवाओं को अपने अंदर नैतिक मूल्य विकसित कर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा का

महत्व बताया व मनुष्य की परिभाषा भी समझाई। उन्होंने बताया कि मनुष्य प्रकृति का प्रतियोगी है ना कि अनुयोगी है क्योंकि मनुष्य विचारशील प्राणी है व उसके अंदर सोचने-समझने की शक्ति है। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों को बताया कि उन्हें अपने माता-पिता व गुरुजनों का सानिध्य लेकर सकारात्मक सोच के साथ जीवन में आगे बढ़ना चाहिए व राष्ट्रहित में अपना योगदान देना चाहिए। उन्होंने 'भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबंधन' विषय पर विभिन्न पहलुओं को रोचक प्रसंगों के साथ विद्यार्थियों को समझाया। साथ ही उन्होंने हिंदी व संस्कृत भाषा में रुचि रखने के लिए भी प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करके व प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दौरःभूमि	१७.५.२३	१	५-४

मानवीय प्रबंधन पर ज्ञान प्राप्त कर लक्ष्य की ओर बढ़ें युवा : वीर्या भारतीय संस्कृति सत्यपरक, नीतिपरक व धर्मपरक : स्वामी

हारियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबंधन पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्यातिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उपस्थित रहे, जबकि बौतर मुख्य वक्ता के रूप में श्री श्री 1008 अखण्ड पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर (पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी) परम पूज्य डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरी महाराज मौजूद रहे। संगोष्ठी के शुभारंभ पर मां सरस्वती वंदना करते मुख्य वक्ता डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरी महाराज।



फोटो : हरियाणा
संस्कृति को पहचानने की जरूरत है। इसके लिए सभी को अपनी निजी जिंदगी में सकारात्मक सोच, उत्साह, सत्यता, विचारशीलता व अच्छे संस्कारों को अपनाना चाहिए। सहज, दार्शनिक व मौलिक विचारों के ज्ञाता गिरी जी महाराज ने बताया कि भारतीय संस्कृति सत्यग्राही है, जैकि परमार्थ व व्यवहारिक, सत्य पर आधारित है। उन्होंने उपस्थित युवा विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति का मतलब समझाया व बताया कि भारतीय संस्कृति सत्यपरक, नीतिपरक व धर्म परक है। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह व अहंकार हमारे विकार हैं, जिन पर हमें नियंत्रण करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि हमारी भारतीय संस्कृति मूल्यों पर आधारित है इसलिए युवाओं को अपने अंदर नीतिक मूल्य विकसित कर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए नीतिक शिक्षा का महत्व बताया व मनुष्य की परिभाषा भी समझाई। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि वेदात, उपनिषद व श्रीमद्भगवत् गीता के प्रकांड विद्वान् स्वामी शाश्वतानंद गिरी जी महाराज के प्रवचन से विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा व उनको अपने भारतीय संस्कृति को समझाने में सहायता भी मिलेगी।

किए। इसके बाद कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने श्वागत किया। मुख्य वक्ता डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरी महाराज ने

बताया कि भारतीय संस्कृति में सत्य, धर्म और नीति का समावेश है। इसलिए चाहे विद्यार्थी हो या युवा और या फिर बुजुर्ग सभी को अपनी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
‘अमृत’ ३ जून।	१७.५.२३	३	१-५

संगोष्ठी

एचएचू के सभागार में 'भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबन्धन' विषय पर संगोष्ठी का अवक्षेपन किया गया। मुख्य अधिकारी के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. बीआर कांबोज उपर्युक्त रहे।

भारतीय संस्कृति में सत्य, धर्म और नीति का समावेश : स्वामी गिरी

मार्ड सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के नूपुर विद्यालय के सभागार में 'भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबन्धन' विषय पर संगोष्ठी का अवक्षेपन किया गया। मुख्य अधिकारी के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. बीआर कांबोज उपर्युक्त रहे।

मुख्य वक्ता नाहाम्बडलेश्वर गारावतनन्द निरी महापात्र ने कहा कि भारतीय संस्कृति में सत्य, धर्म और नीति का समवेत है। इसलिए चाहे विद्यार्थी हो या शुद्ध और या किस भूलुर्मुखी को अपनी संस्कृति को पालनपालन की जरूरत है। इसके लिए सभी



एचएचू में संगोष्ठी के शुभारंभ पर शीप प्रवर्तित गवर्नर डॉ. स्वामी गारावतनन्द निरी महापात्र।

को अपनी निरी निदेशी में सकारात्मक समझाते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति सोच, उत्साह, सत्यता, विचारक्षिता व सत्यपक, नीतिपक्ष व धर्म प्रकृति है। अच्छे संसकारों को अपनाना चाहिए। युवा विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति का पालनपालन की जरूरत है।

उक्तोने कहा कि काम, क्रोध, वृद्धि, लोभ, गोह व अहंकार हमारे विकास है, जिन पर

इन्हें नियंत्रण करने की आवश्यकता है। उक्तोने बताया कि हमारी भारतीय संस्कृति गुणों पर अधिकार है। इसलिए, युवाओं को अपने भद्र वैतिक गुण विकासित कर जाने चाहिए।

उक्तोने विद्यार्थियों के लिए ऐतिक शिक्षा का योग्य बताया व मनुष्य को परिवर्ष भी सम्बन्धित बताया। कि मनुष्य प्रकृति का प्रतिष्ठान है ना कि अन्यथा है। क्योंकि मनुष्य विषयरत्तित प्राप्त है व उसके अंदर सोचने-सम्बन्ध का शावचत है।

उक्तोने उपर्युक्त विद्यार्थियों को बताया कि उन्हें अपने भाव-प्रिय व गुणोंने का सम्बन्ध लेकर सकारात्मक सोच के साथ

नीति में अलोचना भागीए व उद्दीपित में अपना योगदान देना चाहिए। उक्तोने 'भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबन्धन' विषय पर विभिन्न विद्युओं को रोचक प्रश्नों के साथ विद्यार्थियों को समझाया। साथ ही उक्तोने हिंदू त संस्कृत भाषा में रुचि रखने के लिए भी प्रेरित किया। दूसरे महाविद्यालय के अधीक्षणात डॉ. एसके. पटुजा ने उनका स्वागत किया।

कुलपति प्रौ. बीआर कांबोज ने बताया कि विद्यार्थियों को अपनी भारतीय संस्कृति को सम्बन्ध में सहायता भी दिलायी। बहुत भाववीय प्रबन्धन के साथ जीवन में अपने लाभ को प्राप्त करने की प्रेरणा दिलायी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्मान पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दीनेन्द्र दीनेन्द्र	१७. ५. २३	९	५

भारतीय संस्कृति सत्यपरक,
नीतिपरक व धर्मपरक :
डॉ शाश्वतानंद गिरी

हिसार, १६ मई (निसा)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में भारतीय संस्कृति व मानवीय प्रबंधन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य वक्ता महामंडलशक्ति (पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी) डॉ. स्वामी शाश्वतानंद गिरी ने बताया कि भारतीय संस्कृति में सत्य, धर्म और नीति का समावेश है। इसलिए चाहे विद्यार्थी हो या युवा या फिर बुजुर्ग, सभी को अपनी संस्कृति को पहचानने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इसके लिए सभी को अपनी निजी जिंदगी में सकारात्मक सोच, उत्साह, सत्यता, विचारशीलता व अच्छे संस्कारों को अपनाना चाहिए। स्वामी शाश्वतानंद गिरी ने बताया कि भारतीय संस्कृति सत्याग्रही है, जोकि परमार्थ व व्यवहारिक सत्य पर आधारित है। उन्होंने बताया कि हमारी भारतीय संस्कृति मूल्यों पर आधारित है। इसलिए युवाओं को अपने अंदर नैतिक मूल्य विकसित कर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा का महत्व बताया व मनुष्य की परिभाषा भी समझाई।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	16.05.2023		

भारतीय संस्कृति सत्यपरक, नीतिपरक व धर्मपरक : डॉ. स्वामी शाश्त्रानन्द

पांच बजे न्यूज़

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के संस्थान में 'भारतीय संस्कृति व मनवीय प्रवर्षन' विषय पर सांगोष्ठी का आयोजन किया गया। सांगोष्ठी में मुख्य अतिथि के तौर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कामोज उपस्थित रहे, जबकि चतुर युग्म वक्ता के रूप में श्री श्री 1008 अश्वद धैत्यार्थी महामठानीष (पंचामली अद्यात्मा श्री निरजनी) परम पूजा द्वा. ख्यामी शाश्त्रानन्द गिरि जी जी महाराज भीजूट रहे।

मुख्य वक्ता श्री श्री 1008 अश्वद धैत्यार्थी महामठानीष (पंचामली अद्यात्मा श्री निरजनी) परम पूजा द्वा. ख्यामी शाश्त्रानन्द गिरि जी जी महाराज ने बताया कि भारतीय संस्कृति में सत्य, धर्म और नीति का सम्बन्ध है। इसलिए चाहे विद्यार्थी हो या युवा और या फिर युवांग सभी को अपने संस्कृति को प्राचारनने की जरूरत है। इसके लिए सभी को



अपनी निजी जिदी में सकारात्मक सोच, ज्ञान, सत्यता, विचारणात्मता व अच्छे संस्कृती को अपनाना चाहिए। सहज, व्यापक व पौलिक विचारों के ज्ञान गिरि जी महाराज ने बताया कि भारतीय संस्कृति सत्याग्रह के रूप में संरक्षित है। ज्ञान, क्रोध, मद, लोभ, मोह व अल्पता हमारे विकार हैं, जिन पर हमें नियंत्रण करने की आवश्यकता है, जोकि परमार्थ व व्यवहारिक सत्य पर आधारित है। उन्होंने उपस्थित युवा

विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति का यत्नवृत्ति सम्बोधित करता गिरि जी महाराज के प्रवचन संस्कृति व धर्म परक है। धर्म, क्रोध, मद, लोभ, मोह व अल्पता हमारे विकार हैं, जिन पर हमें नियंत्रण करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि धर्म व धर्मपरकता को साथ जीवन में आ बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने 'भारतीय संस्कृति व मनवीय प्रवर्षन' विषय पर विभिन्न पक्षों को साथ विद्यार्थियों को समझाया। साथ ही उन्होंने दिए व संस्कृत भाषा में कविता रखने के लिए भी प्रेरणा किया।

उन्होंने बताया कि हमें प्रकृति के साथ साम्बन्ध स्थापित करके व प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए। उन्होंने बताया कि सृष्टि में प्रकृति को जितनी रक्षनाएं हैं उनमें सबसे श्रेष्ठ,

सबसे परिपूर्ण व सबसे विशिष्ट और अनन्त संभवताओं से युक्त जो रक्षना है वह मनवीय शरीर है। इसलिए हमें अपने शरीर का ध्यान रखने सहूल मनवीय गुणों को अपनाना चाहिए।

पृथ्वीविद्या प्रो. वी.आर. कामोज ने बताया कि बैद्यत, उपनिषद् व श्रीमद्भागवत पौराण के ब्रह्मद विद्यान स्वामी शाश्त्रानन्द गिरि जी महाराज के प्रवचन से विद्यार्थियों को बहुत लाभ होगा व उनको अपने भारतीय संस्कृति को समझने में सहायता भी मिलेगी। उन्होंने बताया कि बैद्यत समय में बैहर मनवीय प्रवर्षन के साथ जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा मिलेगी।

विश्वविद्यालय एक ऐसा संस्थान है जो ग्रन्थमणि क्षेत्र व खोजीवाली से जुड़े आपनाओं की सेवा में समर्पित है। उन्होंने आशा की कि विद्यार्थियों भारतीय संस्कृति व मनवीय प्रवर्षन विषय पर ज्ञान प्राप्त करके नीतिक मूल्यों को स्वेच्छारूप स्वरूप बैहर द्वारा सेवाजन में अपना योगदान दे सकेंगे।